09 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अलौकिक रीति से होली जलाने और मनाने का अनुभव

➢➢ आज तो मैं खेलूंगी होली शिव बाबा के साथ

➳ _ ➳ मैं ज्योति स्वरूप आत्मा होली के त्यौहार की उमंग में हूं

➳ _ ➳ आहा होली आई है रंगों का त्योहार

➳ _ ➳ पुराने को खत्म कर नए रंगों में रंगने का त्यौहार

→ मेरी होली संगम युग की होली है

→ सारा संगम युग होली बनने और बनाने का युग है

→ मैंने संगम युग में जन्म लिया

■ बाबा ने मुझ आत्मा को होली बना दिया

→ सारा संगम युग ही होली है

■ दहन है

■ मिलन है

■ रंग है

➳ _ ➳ मैं योग युक्त आत्मा

→ परचिंतन के संकल्पों की सूखी हुई लकड़ियों को

→ आसुरी संस्कारों की सूखी हुई लकड़ियों को

■ ढूंढ ढूंढ कर इकट्ठा कर रही हूं

■ एक एक कमजोरी की लकड़ी को ढूंढ कर निकालती हूं

■ मैं होलिका की तैयारी कर चुकी हूं

➳ _ ➳ मैं होली आत्मा

→ इस होलिका को कलियुग की निशानियों को आग लगाने को तैयार हूं

→ मैं आत्मा निरंतर संकल्प स्वरूप बनने की अभ्यासी आत्मा

■ इस अभ्यास के मसाले से

■ बाप के साथ संबंधों की माचिस से

■ दृढ़ संकल्प की तीली से

→ कलयुग की होलिका को प्रज्वलित करती हूं

■ कलयुगी संस्कार भस्म हो रहे हैं

→ इस होली में मैं दहन कर रही हूं

■ हर व्यर्थ संकल्प को

■ हर कमजोर संस्कार को

■ हर युद्ध के संस्कार को

■ हर मेहनत के संस्कार को

→ मैं हर मेहनत से मुक्त हो रही हूं

→ मैं आत्मा हर मेहनत से मुक्त हूं

→ बापकी मोहब्बत में मगन हूं

➳ _ ➳ मैं बाबा के संग होली मिलन मनाने को तैयार हूं

→ यह संगम युग है मंगल मिलन का युग

→ बाबा से मिलन मनाते मनाते

■ मैं बाबा के गले का हार बन गई

■ यह सदा काल का मिलन है

- यह अविनाशी मिलन है

→ बाबा ने मेरे मस्तक पर तिलक लगाया

- मैं सदा तिलकधारी हूं

→ मेरे नैनों से स्नेह का सुगंधित रंग छलक रहा है

→ मेरे मस्तक की पिचकारी से प्रेम की धारा बह रही है

- मैं आत्मा बाबा को भिगो रही हूं
- पर मैं खुद ही सरोबार हो रही हूं

→ बाबा भी नैनो से अष्ट रंगों की पिचकारी से खेल रहे हैं

- यह अष्टरंग साधारण नहीं यह अष्ट शक्तियां है

→ मैं आत्मा इन रंगों को स्वयं में समाकर शक्ति स्वरूप बन रही हूं

- हर गुण का रंग
- हर शक्ति का रंग
- बाबा के स्नेह का रंग
- मुझ पर लगा है

→ बाबा की दृष्टि पड़ने से मेरा रूप परिवर्तन हो गया है

- मैं सर्वगुण संपन्न 16 कला संपूर्ण बन रही हूं

→ यह होली खेलते खेलते

- मैं सदा के लिए होली बन गई हूं
- मैं सदा के लिए बाबा की होली
- मैं सदा के लिए होली हंस बन गई हूं

→ बाबा मुझ आत्मा पर

- पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं
- फूलों की वर्षा कर रहे हैं

→ सुप्रीम रूह की आब से,

- मैं रूहानी गुलाब बन गई हूं

→ मेरा मन मीठा हो गया है

- हर संकल्प श्रेष्ठ है

→ मुख भी मीठा है

- वाणी वरदानी हो रही है

➳ _ ➳ मैं होली हंस हूं

→ ज्ञान के रत्न बांटने को तैयार हूं

➳ _ ➳ मैं रूहानी गुलाब हूं

→ विश्व में सर्व आत्माओं को रूहानी खुशबू से महकाने को तैयार हूं

➳ _ ➳ मैं परमात्म प्रेम में रंगी आत्मा हूं

→ विश्व को परमात्म प्रेम पहुंचाने की निमित्त हूं